पवनारेख / तारा आरेख
Wind Rose / Star Diagram

बोलेंद्र कुमार अगम,
सहायक प्राध्यापक भूगोल,
राजा सिंह कॉलेज सिवान

तारा आरेखों को **वृत्त** या **घड़ी आरेख** (Clock Diagram), **रोज आरेख** (Rose Diagram) तथा **वेक्टर आरेख** (Vector Diagram) आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है । इन आरेखो के द्वारा सदिश या वेक्टर मूल्यों को केंद्र या मूल बिंदु से संबंधित दिशाओं में सरल रेखाएं या कॉलम खींचकर प्रकट करते हैं तथा इन आरेखो या कॉलमों की लंबाइयों को दिए हुए मूल्यों के अनुपात में मापनी के अनुसार निश्चित करते हैं । किसी स्थान पर दिशाओं के अनुसार वर्ष में पवनों की बारंबारता दिखलाने के लिए यह आरेख बहुत उपयोगी होते हैं परंतु आर्थिक वितरण जैसे व्यापार की दिशा अथवा विभिन्न दिशाओं में जनसंख्या के स्थानांतरण के आंकड़ों को भी इन आरेखों के द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है ।

साधारण पवन आरेख (Simple Wind Rose)

इस आरेख के द्वारा यह दिखलाया जाता है कि किसी स्थान पर एक वर्ष में पवन कितने-कितने दिन किस-किस दिशा वाली थी और उस वर्ष में कितने दिन ऐसे थे जब पवन शांत थी । आरेख में पवन चलने के दिनों को संबंधित दिशाओं में मापनी के अनुसार लंबी रेखाएं या कॉलम बनाकर प्रकट करते हैं तथा शांत पवन वाले दिनों की संख्या को केंद्र पर बनाए गए एक छोटे वृत्त के भीतर अंकों में लिखकर इंगित करते हैं । आरेख को तारे का रूप प्रदान करने के उद्देश्य से केंद्र से विभिन्न दिशाओं में विकरित होने वाली इन रेखाओं के बाहरी सिरो को सरल रेखाओं द्वारा मिला दिया जाता है । सामान्यत: साधारण पवन आरेख में पवन की आठ दिशाएं (उत्तर, उत्तर-पूर्व, पूर्व, दक्षिण-पूर्व, दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, पश्चिम तथा उत्तर-पश्चिम) प्रकट की जाती है परंतु आवश्यकता होने पर उत्तर-उत्तर पूर्व, उत्तर पूर्व-पूर्व आदि शेष आठ दिशाओं की पवनों की बारंबारताओं को भी आरेख में प्रदर्शित किया जा सकता है ।

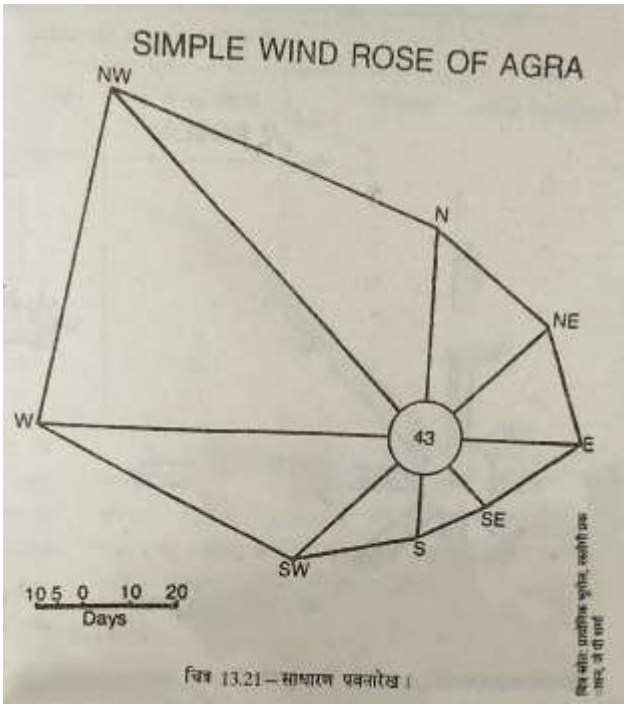

चित्र 13.21– साधारण पवनारेख ।

सन्दर्भ: प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी प्रकाशन, जे० पी० शर्मा